एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

धान की फसल में होने वाले प्रमुख रोग एवं उनका प्रबंधन

*शेर सिंह बोचल्या एवं डॉ. मोनिका पटेल
कृषि विस्तार शिक्षा विभाग, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: drshersinghbochalya@gmail.com

1. झुलसा रोग (Blast रोग)

- **रोगजनक**: *Pyricularia grisea* (फफूँद)
- **लक्षण**: पत्तियों पर आँख के आकार के भूरे धब्बे—भीतर धूसर, किनारे गाजरी भूरे; गंभीर होने पर पौधे सूख जाते हैं; तना-कंडों पर छाल गलकर काली हो जाती है।
- **प्रबंधन:**

✓ प्रतिरोधी किस्में उगाएँ (जैसे: दुर्गेश्वरी, इंदिरा राजेश्वरी, IR-64)।
✓ बीज को ट्राइसाइक्लाजोल (2 g/kg) से उपचारित करें।
✓ जरूरत पड़ने पर फफूँदनाशक छिड़काव (जैसे: ट्राइसाइक्लाजोल, फ्यूजीवं, फालिक्यूर)।
✓ संतुलित नाइट्रोजन दें, खेत अवशेष जला दें, बीज प्रमाणित स्रोत से लें।

2. पत्ती झुलसा (Leaf Blast / Bacterial Leaf Blight)

- **रोगजनक:** बैक्टीरिया (*Xanthomonas oryzae*)
- **लक्षण:** पत्तियों के किनारे झुलसने जैसे भूरे ठस धब्बे और टेढ़े सूखे किनारे; संक्रमण से दाने नहीं बनते।
- **प्रबंधन:**

✓ स्वस्थ बीज उपयोग करें।
✓ बीज को स्ट्रेप्टोमाइसिन व कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के घोल में भिगोएँ।
✓ नाइट्रोजन देने में सावधानी; संक्रमित खेतों से पानी अन्य खेतों में जाने न दें।
✓ तांबे के हाइड्रॉक्साइड का छिड़काव उपयोगी हो सकता है।

3. शीथ ब्लाइट (Sheath Blight)

- **रोगजनक:** *Rhizoctonia solani* (फफूँद)
- **लक्षण:** पत्ती की म्यान पर हरे-भूरे धब्बे, धीरे-धीरे भूरे-सफेद केन्द्र बनना; गंभीर होने पर पत्ती नष्ट हो जाती है।
- **प्रबंधन:**

✓ बीज उपचार: *Streptomyces florensis* या *Trichoderma* द्वारा (10 g / 4 g प्रति kg)।
✓ फसल में Indofil M-45 (2.5 kg/1000 L) छिड़काव।
✓ संतुलित नाइट्रोजन, सिंचाई व जल निकासी पर ध्यान।

4. भूरे धब्बे रोग (Brown Leaf Spot)

- **रोगजनक:** *Helminthosporium oryzae* (फफूँद)

- **लक्षण:** गोलाकार भूरे धब्बे पत्ती पर; आगे बढ़ने पर पत्तियाँ सूख जाती हैं; दाने प्रभावित होते हैं।
- **प्रबंधन:**

✓ बीज उपचार – Streptomycin + Copper Oxide या बायो-उपचार।

✓ खेत में Indofil M-45 (2.5 kg/1000 L) छिड़काव।

✓ Tilt (Propiconazole), Tricyclazole + Mancozeb जैसे फफूँदनाशक उपयोगी।

5. खैरा रोग (Bacterial Leaf Blight due to Zinc Deficiency)

- **कारण:** जस्ता (Zn) की कमी
- **लक्षण:** पत्तियाँ पीली हो जाती हैं, कत्थई धब्बे बाहर आते हैं; जड़ें कत्थई, वृद्धि रुकती है; उपज में कमी।
- **प्रबंधन:**

✓ खेत की तैयारी में 25-30 kg ज़िंक सल्फेट प्रति हे. डालें।

✓ लक्षण दिखने पर 5 kg $ZnSO_4$ + 2.5 kg बुझा चूना प्रति हे. घोलकर छिड़काव। यदि उपलब्ध न हो तो यूरिया–$ZnSO_4$ मिश्रण।

6. फॉल्स स्मट (False Smut / कंडुआ रोग)

- **रोगजनक:** *Ustilaginoidea virens* (कवक)
- **लक्षण:** बालियों में नारंगी/हर-काले स्मट बॉल्स बनते हैं; दाने बदरंग, हल्के और भीड़ होते हैं; 25-75% तक उपज घट सकती है।
- **प्रबंधन:**

✓ प्रमाणित, स्वस्थ बीज का उपयोग; रोग-प्रतिरोधी किस्में चुनें।

✓ बुवाई से पहले बीज को 52 °C पर 10 मिनट उपचारित करें, और फसल चक्र अपनाएँ।

✓ प्रभावी होने पर प्रोपिकोनाज़ोल, पिकॉक्सीस्ट्रोबिन + ट्राइफ्लोक्सिस्ट्रोबिन इत्यादि फफूँदनाशकों का छिड़काव।

7. Dwarf Virus (SRBSDV – Southern Rice Black-streaked Dwarf Virus)

- **लक्षण**: पौधे बौने हो जाते हैं, पत्तियाँ संकरी व सूखी, जड़ें कमजोर होती हैं।
- **प्रबंधन:**

✓ किसानों को तुरंत सूचित किया गया, खेत निरीक्षण और कीटनाशक का नियंत्रित उपयोग किया जा रहा है।

✓ नियमित निगरानी, स्वस्थ उत्पादक संघों से मार्गदर्शन लें।

सारांश तालिका

रोग का नाम	जनक/कारण	मुख्य लक्षण	प्रबंधन उपाय
झुलसा (Blast)	*P. grisea* (फफूँद)	आँख के आकार के धब्बे, सूखना	प्रतिरोधी किस्म, बीज उपचार, फफूँदनाशक
पत्ती झुलसा	*X. oryzae* (बैक्टीरिया)	झुलसे किनारे, दाने न बनना	स्वस्थ बीज, इलाज, नाइट्रोजन नियंत्रण
शीथ ब्लाइट	*R. solani* (फफूँद)	म्यान पर धब्बे, पत्ती मरना	बीज उपचार, Indofil M-45 छिड़काव
भूरे धब्बे	*H. oryzae* (फफूँद)	भूरे धब्बे, पत्ती सूखना	बीज उपचार, फफूँदनाशक छिड़काव
खैरा (Zn कमी)	जस्ता की कमी	पीली पत्तियाँ, बौना विकास	$ZnSO_4$ छिड़काव, चूने/यूरिया उपयोग
फॉल्स स्मट	*U. virens* (कवक)	स्मट बॉल्स, दाने दोषपूर्ण	बीज उपचार, फफूँदनाशक, क्षेत्र स्वच्छता
Dwarf Virus (SRBSDV)	वायरल संक्रमण	बौने पौधे, कमजोर जड़ें	निगरानी, कीटनाशक, खेत निरीक्षण

निष्कर्ष

धान की खेती में इन रोगों के प्रति सचेत रहना अति आवश्यक है। रोग-प्रतिरोधी किस्मों का चयन करने, स्वस्थ बीज, उचित उर्वरक संतुलन, फसल अवशेष प्रबंधन, और नियमित फसल की निगरानी से किसान प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित कर सकते हैं।

संदर्भ

1. Krishi Jagran Hindi – धान की प्रमुख बीमारियाँ और उनका प्रबंधन
2. UP Agriculture (उत्तर प्रदेश कृषि विभाग) – धान की प्रमुख चार रोग व उनका नियंत्रण
3. Farm and Food – धान की फसल के प्रमुख रोग और उनका प्रबंधन
4. Kisan Vedika – BigHaat – धान के प्रमुख रोग और उनका नियंत्रण
5. Bihar Agro – धान में होने वाले खतरनाक रोग
6. Kisaan Helpline – हाईब्रिड धान को फॉल्स स्मट रोग से बचाना आवश्यक क्यों?